कुँवर नारायण, *इन दिनों*, नई दिल्ली
(राजकमल प्रकाशन) 2002

बाज़ारों की तरफ़ भी **Ook wel eens naar de markt** **Kunwar Narayan**

आजकल अपना ज़्यादा समय
अपने ही साथ बिताती हूँ ।

ऐसा नहीं कि उस समय भी
दूसरे नहीं होते मेरे साथ
मेरी यादों में
या मेरी चिंताओं में
या मेरे सपनों में

वे आमंत्रित होते हैं
इसलिए अधिक प्रिय
और अत्यधिक अपने

वे जब तक मैं चाहूँ साथ रहते
और मुझे अनमना देखकर
चुपचाप कहीं और चले जाते

कभी-कभी टहलते हुए निकल जाता हूँ
बाज़ारों की तरफ़ भी :
नहीं, कुछ ख़रीदने के लिए नहीं,
सिर्फ़ देखने के लिए कि इन दिनों
क्या बिक रहा है किस दाम
फ़ैशन में क्या है आजकल

वैसे सच तो यह है कि मेरे लिए
बाज़ार एक ऐसी जगह है
जहाँ मैंने हमेशा पाया है
एक ऐसा अकेलापन जैसा मुझे
बड़े-बड़े जंगलों में भी नहीं मिला,
        और एक ख़ुशी
        कुछ-कुछ सुकरात की तरह
        कि इतनी ढ़ेर-सी चीज़ें
        जिनकी मुझे कोई ज़रूरत नहीं !